

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

वेत्रधनिवत्सारगामियनिरावनामनकूसरमडकसंरुशि
यजाश्यनवयनिरात्रिःसाययनियुषिगःसुप्रजवधिसगर
लेखयुद्धं ॥ २ ॥ मरणागारेनवि॥ निमीनादिचक्र
स्वष्टिदत्रमभानृहं सत्यगनकादिष्टगनादव्यूरीशमामियुगः
लिगाधगमिनिनननिलसगोयमङ्गावनव्यूरी॥ कृगडंतमा

श्रीगणेशाय नमः
AC 4470/1/2/3

2873

मिदवीश्रीवकुविनाशिरुवद्वजनखंससहानदवीश्रीदि
 यातयुष्मिगालिकामयुयथीदगठुविमुद्धसमुलनिखयंमि
 ॥ ॥ वमूदवैत्रसालद्वनयसिचकुःयादसद्वनसंरा
 गचकुंरद्वाविमगदवकुसवसदासुखचकुंकावयुयथी
 द्वयुक्तार्थं ॥ ॥ ददतिजिनविद्यागिरुयानरादनिःश

ध्वननगधननादवुयीश्रीथादिदधनुमिधुगधुयजनि
 किनहनदायनिविनम्ववीय ॥ दयनयुगिनिम्वजव
 कचधायमजुदितिसिस्मननवकुदवीश्रीसंजसंमायुं
 श्यायसन्नताः इगंनिनामनामाकयुगा ॥ ३ ॥ ॥ शना
 गगधारेववी ॥ एमकदहनयचरहनखवुयद्वयवामयनसय

॥ गगकदहन ॥

वसावियजिया ॥ ६ ॥ ॥ शुक्रदवीवविनायाकिशुवनवीचार
 विनामत्रायकसमयाज्ञानन्द ॥ ॥ विनाविलखनसदजा
 आनन्दश्चकवकसत्रावरुहदयाज्ञानन्द ॥ ॥ यचवृद्ध
 यचस्कन्धसावयश्चदवाअसूचनचयुमदिगहदया ॥
 ॥ उम्भूहं दीखखधनकचिकश्चमचुद्यंमृत्मानि विनास

माज्ञानन्द ॥ ४ ॥ ॥ राजागकध्वदी ॥ खठकागिनी
 किशुवनवायिगाश्चिद्युमात्रदृष्टदय्यविनामानि ॥ ६
 ॥ नमासीश्चदवीशीवडवावादिस्माद्विसिद्धिद्वयानिऊगाग
 जननि ॥ ॥ पूर्वदलदिगागत्रकवर्धुगिनिश्चूमानका
 गिनीदविनित्रवर्धु ॥ ॥ वायूवासादितीदवीगिगत

खठकागिनी

॥४॥ ॥४॥ ॥४॥

ॐ हारयश्चि मसं चाविनी लोत्रवर्धु ददा ॥ ॥ नमो ॥
सग्रागिनिदत्रिगवर्धु हारदकि (क्षत्र) धिकादवीधूमव
धुं गी ॥ ॥ चकुचुडु न कानना यच म् डारुननारु
खविडरुवनववसं दिगाम्बवा ॥ ५ ॥ ॥ नमो ॥
नवी ॥ ॐ आ हूं हूं अंग नखा दाम कुड चात्रनत्रश्य जायू जिय

यद्यः अरुवंत लख नूययत्रिलव ॥ ६ ॥ ॥ श्वश्वः स्वादिश्व
लियलात्रः यद्यः आठयश्चिद्युत्रश्यचमयत्रसमिल
यच हानसर्वत्रिल ॥ ॥ सर्वश्वकवाकसुगयुनयिः
आवासां जयसात्र शदाकदा किनिदू ॐ अरुसमममन ॐ
द्ववत्रिगकडव ॥ ॥ दानयमिसर्वकाश्चलयासर्वसि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

द्विसंयतिगमनिर्द्वयसंसायतथागारायचनसर्वस्वसं
यतिवृद्धिः ॥ ॥ समयायकुरु दानयति सर्वकाय
सर्वसिद्धिसंयतिगमनिर्द्वयकथेवागथेवास्तुर्द्वयवंध
द्विषधमात्रिकुञ्जमगल ॥ ३ ॥ ॥ **द्विगद्वयमगल**
॥ मनिवपुननकलजास्तुवमासः सवृत्तकुलवपुनमाय

वक्यकलसत्रकालसंयतिरुत्रिमन्मकुलवपुनमाया ॥
ॐ ॥ उमन्मकुनयियाः पुनकनूषात्रिमन्मद्वववयि
यावकवावादिआलिगमसम्वनकनयिया ॥ ॥ ॥
गिसंवित्रवित्रस्वत्रिकुदिकदितदितदिअष्टसमभान्य
२अनरुक्तसर्वदवः वक्याउमदवीमित्रक्तिवयनसंहा

य॥ ॥ प्रियुवनतुक्तुप्रवृत्तायराधाः प्रियुवनतु
 क्तुप्रवृत्तायराधाः प्रियुवनतुक्तुप्रवृत्तायराधाः
 हृदियाउत्तुकाकात्रा॥ ॥ अदिहिसंस्तुप्रवृत्तायराधाः
 नः हृदिरुत्तुकाकात्रा॥ ॥ अदिहिसंस्तुप्रवृत्तायराधाः
 नः हृदिरुत्तुकाकात्रा॥ ॥ अदिहिसंस्तुप्रवृत्तायराधाः

रामलजित॥ अत्रुत्तुकाकात्रा॥ ॥ अदिहिसंस्तुप्रवृत्तायराधाः
 नः हृदिरुत्तुकाकात्रा॥ ॥ अदिहिसंस्तुप्रवृत्तायराधाः
 नः हृदिरुत्तुकाकात्रा॥ ॥ अदिहिसंस्तुप्रवृत्तायराधाः
 नः हृदिरुत्तुकाकात्रा॥ ॥ अदिहिसंस्तुप्रवृत्तायराधाः
 नः हृदिरुत्तुकाकात्रा॥ ॥ अदिहिसंस्तुप्रवृत्तायराधाः

॥ ८ ॥

मयः गन्धावसंयुक्तं संखल्विगतयच यियुषं रङ्गं कात्रमकुप
 ध्वावावन्धवजसंखलायिग विद्याककत्रसं॥ ॥ द्यतमखतत्र
 मयव्यखव आकृष्टः मृदा किनी जमल्यं रसमिडिसंक्षत्रन
 दवगाचकु हानसखमानिक विड किन्ननं॥ ॥ याश्चादि आ
 चमनः दानयूनसवनः समयचक्रयुहा शिक विमत्रकत्रसंरस

हावागदवमुयवाविचिकत्रयसमयलं हानचक्रनकीरतं॥
 ॥ ॥ **॥ राजानात ॥** चक्रवर्धु विजावनमुद विः अष्टागदम
 मुजयुदनेत्रे किन्नन॥ ॥ ॥ **॥** मुक्तदवीवाग्मिसहासामकिदवीर
 जगत्तुमादिप्रमयनदं सुजाहू॥ ॥ **॥** आगमयदयनानेवः
 वान्यश्चागधर्मदिक्कागुचूडयदश्व॥ ॥ यचवर्द्धखत्रलूय

॥ १४५६७८९१॥

[illegible][illegible]

हूं हूं हूं ॥ ॥ जिलवर्धुचतुवकपविमस्यविनर्तुः यत्र स सा आ
 नन्दमन्त्रतिथ्या रविखवजः अर्द्धचतुजटासकूटधारीः हा
 दग्राह्यमस्य स्वरिणा ॥ ॥ वज्रचक्राजचर्मउत्तमसुखलागा
 विमलानन्दमन्त्रव्या रकवर्तिकयात्रयत्र मुयागमिष्यन्तु
 कृष्णव्याः वाद्युचर्मकविशायिणा ॥ ॥ दिव्यमणि

गंगाकाश्यादिजसदाकिनीदेवीः सहजाग्रतनुमन्त्रि
 तारनामिश्नीचक्रसंस्तवाः सगगुणगुचत्रतज्जाधिना ॥
 ११ ॥ ॥ वा मन्त्र ॥ हाउ ग्राह्यनः टीयायिदसावना
 धनवीकवावी लिखरं सा रगुक्तावात्रंगः सधियास्रमानः
 सकूटकंभादिगन्धवा ॥ ॥ ॥ ललललसावः सत्यवद्याया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

समस्तगुदविभाजकात्रहसविनादिनिःखडवात्रादिः
दामादियाभादमात्रा ॥ ॥ सावित्रायनःवचससुसयन
कय्यरुवयिगवात्राशगगानिनावधुःवद्विचरुदाःमा
समुलरुवविना ॥ ॥ त्रियधस्त्रुवडकः ॥ ॥ दिग्यजसम
लःवायिसयिसून्यरुवकात्राशहसविनादिनीमत्रा

दिगुक्तविनदखनमिजुन्धना ॥ ॥ साडात्राविना
वजःवडकालियाडलःसगगुवचनआत्राधशसयाजा
नदुःहविमत्रासधुचसात्रमत्रवडवात्रादि ॥ ॥
॥ ॥ रागकर्तव्य ॥ ॥ विदंदात्राययिआगिनीधदकव
विदकसलकालिसद्यनककैवियात्र ॥ ॥ साडागिनीरु

॥ ४ ॥
॥ ५ ॥
॥ ६ ॥
॥ ७ ॥
॥ ८ ॥
॥ ९ ॥
॥ १० ॥
॥ ११ ॥
॥ १२ ॥
॥ १३ ॥
॥ १४ ॥
॥ १५ ॥
॥ १६ ॥
॥ १७ ॥
॥ १८ ॥
॥ १९ ॥
॥ २० ॥
॥ २१ ॥
॥ २२ ॥
॥ २३ ॥
॥ २४ ॥
॥ २५ ॥
॥ २६ ॥
॥ २७ ॥
॥ २८ ॥
॥ २९ ॥
॥ ३० ॥
॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥
॥ ३३ ॥
॥ ३४ ॥
॥ ३५ ॥
॥ ३६ ॥
॥ ३७ ॥
॥ ३८ ॥
॥ ३९ ॥
॥ ४० ॥
॥ ४१ ॥
॥ ४२ ॥
॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥
॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥
॥ ४७ ॥
॥ ४८ ॥
॥ ४९ ॥
॥ ५० ॥
॥ ५१ ॥
॥ ५२ ॥
॥ ५३ ॥
॥ ५४ ॥
॥ ५५ ॥
॥ ५६ ॥
॥ ५७ ॥
॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥
॥ ६० ॥
॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥
॥ ६३ ॥
॥ ६४ ॥
॥ ६५ ॥
॥ ६६ ॥
॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥
॥ ६९ ॥
॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥
॥ ७२ ॥
॥ ७३ ॥
॥ ७४ ॥
॥ ७५ ॥
॥ ७६ ॥
॥ ७७ ॥
॥ ७८ ॥
॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥
॥ ८१ ॥
॥ ८२ ॥
॥ ८३ ॥
॥ ८४ ॥
॥ ८५ ॥
॥ ८६ ॥
॥ ८७ ॥
॥ ८८ ॥
॥ ८९ ॥
॥ ९० ॥
॥ ९१ ॥
॥ ९२ ॥
॥ ९३ ॥
॥ ९४ ॥
॥ ९५ ॥
॥ ९६ ॥
॥ ९७ ॥
॥ ९८ ॥
॥ ९९ ॥
॥ १०० ॥

अथ निमित्तं हि गंगा न

संसाद्य गंग ननु कुरु विना ॥ १४ ॥ ॥ **अथ गंगा ननु** ॥

अथ निमित्तं हि गंगा ननु निमित्तं समदक्ष शक्यं कुरु विनयन रि
ख सवदना ॥ ॥ गंगा ननु कुरु गंगा ननु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु
अथ न कुर्वन्वाया ॥ ॥ निमित्तं विनयन इति खरि गंगा ननु
रक्षा गंग गंगा विनियुत न ता थ ॥ ॥ दधि दधु दधु दधु

अथ गंगा ननु

दधु दधु दधु दधु दधु दधु दधु दधु दधु दधु ॥ ॥ नि
विनियुत न ता थ ॥ ॥ गंगा ननु कुरु गंगा ननु कुरु गंगा ननु कुरु
वदय कुरु ॥ ॥ ॥ **अथ गंगा ननु** ॥ ॥ कुरु गंगा ननु कुरु
दधु दधु दधु दधु दधु दधु दधु दधु दधु दधु ॥ ॥ कुरु
गंगा ननु कुरु गंगा ननु कुरु गंगा ननु कुरु गंगा ननु कुरु गंगा ननु कुरु

रक्षा दत्त आरु न विरु खितः सख न द्यं मृड ला त्राः विनि किं न
 तित यति नि नि नित यना ॥ ॥ कन हि मय नः गी यनू न
 नन न सिन सा ला शकु र्वि ख ला ला व न स कू त क म ॥
 मित्र स मि पुत्राः क ऊ ल रु न श क सु नि क य न ना ख ल
 सख सा वि ॥ ॥ रु न यि स न व डः वा य वि दो स र श्या

व ड द वी य म द गी द नू न या या ॥ १३ ॥ ॥ र व
 मा द ॥ अ उ नि धि दि न वा म ज्ञा न र व गी कि न धः माल सं ग
 सा र मा म सख मा द व दि या या साः वि नु व न या या अ च र वि
 ना ॥ कु ॥ न मा मि धी च ल स द्वा मा र व नाः ज्ञा न म कुः र य द
 दि ना र वि ख ना थ वि ख या यितः वि रं वि कु स द्वा का पु ना या

१ अ उ नि नि दि न वा म ज्ञा

॥
॥
॥
॥
॥

॥ रमागम उ ग्री ॥ चकीक वल
न गी वनू द न न व मिल सा आ र मि र व की च की म
वि मः ग म म क ना दि व वृ त्रि य या म ॥ ५ ॥ ए म उ श सि र द न न
मा न का ना या श क ना थ श्री म न न ना या ॥ ॥ व उ क म म
क स थ व त्रि यः कं कृ कि या उ व र स र सं व कृ डा गि नी

क म न वि हा सि ग न म हा स व म मी यु सा द ॥ ॥ व उ वा य
दि म त्रि ग न ना च यि व कृ वि द न रं म र वा कृ त्रि का लि त्र यी या कृ
दं गि र नू डाः अ र्क नु व र न न य म द ॥ ॥ स र उ सं वृ त्रि य या
म अ गि क नू पा न श्री द न व र न त उ म द ॥ ॥ म त्रि म नः की
दं गि र नू डाः वि वा स यि स न्य क नू म ॥ ॥

यायिना ॥ ॥ खदयआगतत्रः साविल्लुचकुदलि
मयूमलुलरवलिनारनिर्मत्रदययत्रः चकुदयिना
आदिनिमिदः अग्रमयमायवम ॥ ॥ आननुयजमान
नुवित्रमासदः चकुमाननुअसंरुवारयुमाजवित्रमा
मः ननुआविमहासूयः सुवांगहंयायीना ॥ ॥ ॥ दव

ऊकात्रचक्रशीचक्रसंख्यनः अनन्तकाटि सिद्धियालं
गगाश्रीद्वयतादियानेः पूर्वगिनि जावधुत्रयुमुमहा
मुखजाने ॥ २२ ॥ ॥ **स्वागनाम** ॥ सकत्रऊग
मगुचः सम्वनविचार अनूयनकननकत्रितसुखवि
॥ के ॥ सम्वनसम्वनकननमादिनाखंरविदिविक

विनासननन ॥ ॥ दवीवात्रादिपुक्तामादिनदसुखवह
यद्वनविआविसुखा ॥ ॥ सकत्रविघ्नहनिमगिनिगि
लाश्रमिपतिमगतिः वागिनन ॥ ॥ लावालावकनादतिवी
कचिस्कारअनूयनः सुखत्रिमर्गसुचिका ॥ २३ ॥ ॥
स्वागनाम ॥ कउननूयनाकसुखकनननूयवृद्धंरअसु

सकत्रऊ

अने ॥

यानि वं ऊन समया लविरुधं ॥ कृ ॥ नाचयि अत्र धूडा का
नकमान्य श्रव ल्वांगु मवृगी वानय सिवमात्रा ॥ ॥ अं
कूलस्य निवं ऊनः अंकु वस्य विदना श्र अनेरु वधय सवया ल
विमुद्ध ॥ ॥ कंकु वा वद पुवज कंकु वा वलिना श्र अत्र वृत्त
का कूमति सहसा वडा ॥ ॥ रुवहं रुवहं दस रुवव सरुद्धे

लानि शुवन नाथय कः सत्ववत्राया ॥ २४ ॥ ॥ राना व
वी ॥ गऊ किन डदक दाल्य धरियाः कसव कृ विठाः अंया वान
श्रु मवृक वरि कं थय विवाः वामस्व ल्वांग कया वधया ॥
कृ ॥ श्री १ सत्ववत्राया वाष्टु विगु न्त ऊंगु लिना श्र माचयि
वचाय यियावः मायाः सा ल्म रुय म्द लिना ॥ ॥ याम

अ
त्रि
न
८॥

वृक्षमदः वामलाथधविद्या उ नमः सिवमा नमः निवदवि
तयादिगकनेका रुवः च उ म स्व अ ति विक वा न अ ध वा

॥ ॥ आलिखय आरु यिव व चा य शि या नः का प्रिया शि वि
स्व मा नू या र वि ख कू लि सः अर्ध च द्य ऊ टा रु कः व्या द्यु च मा
स्व उ म द ॥ ॥ ॥ हि सं वि रं वि व ख ल ना य कः शि नि च

महावीरं विचारक नू न गृ ग्म न वि रं वि व ख न यु ऊ यि स
य न सं सा न इ ध वा ॥ २५ ॥ ॥ ॥ रा ग ग म प द वी ॥
वि उ व न कालि ग म नू ति अ नू वा य न य वं गि ॥ ॥ ॥ रा ना य यि
व ऊ स ख य न म ख ल वि न व कि ॥ ॥ ॥ रा मी स द मु कि व न
द म रू क स हा य वं गि ॥ ॥ ॥ व दू वि द नू य स द मु आ वा क न

र व न क र ग ॥

वंकि ॥ १५ ॥ ॥ रागा का मा द न ॥ य क लि त कं का न य

रु व म नू तिः ॥ नू नु नि ना का स त द द श वि ष्व ड खि न क न नः
न ल म कू ट का षा धि यं ॥ क ॥ न मा मि थि च धु वि वः रु व सि
धू व न न न श वि ख ना थः शि शु व न वा यि नाः वं ना सि धू स क
व नं ॥ ॥ अ न न क ज्ञा न रूः श्री रु व न वि वः स द शि शु व न

न श वा म ग ड नि द ह्या स व नः रु व त्रि शा स ख च स न क
नं ॥ ॥ ना ना च ह्या द नो य नः क थि म र व न नु शि व त द द श
र द ह्य क वा नः रु व म व द नाः शि शु व न वा यः च चं द वि वं ॥
॥ वि ना धि य सर्व रु य द न नः व न यि सा चः द म न क मा स र
शू व न न ड क व दी न या दः सर्व सि धि सा क रु व दं ॥ १६ ॥

८॥ विद्वत्पुत्राश्च ॥

॥ **आगमं धारयन्ती** ॥ विद्वत्पुत्राश्च विद्वत्पुत्राश्च विद्वत्पुत्राश्च
शुक्लकृत्तुद्वीवज्जिनासिनिःकलाहानचक्र ॥ २५ ॥
पितृयित्रमहाप्रसंगाद्ददन्तश्चर्मताक्रमागसत्त्वडधः
वनाथं ॥ ॥ वज्रवाजादिशूरिमकजगमनेश्चस्त्वनचवि
रुःकृत्तुकियासमचय ॥ ॥ गुण्यसदन्तइगतामनश्च

॥ **कृत्तुद्वीवज्जिना** ॥ २६ ॥ ॥ **आगमं** ॥
॥ सददन्तःसाध्याओमिचयवर्द्धःयश्चन्यनाताकृत्तुमश्
ज्वयष्यत्यलकृत्तुद्वीवज्जिनासिनिःकलाहानचक्र ॥
॥ ॥ कृत्तुद्वीवज्जिनासिनिःकलाहानचक्र ॥
॥ ॥ कृत्तुद्वीवज्जिनासिनिःकलाहानचक्र ॥

८॥ विद्वत्पुत्राश्च ॥

द्विप्रसादा ॥ ॥ इर्गतिवाः विप्रदागमात्रचयकः अनगः
वृद्धशुक्लसाहिगारशुद्धवायुः अथरेववकागिनीः अनगार
गादिनक्षत्रयानं ॥ ॥ यूर्वदष्टिनः यष्टिमतडरुनदिगः
तिनयितत्रकदविनवक्ष्मश्रयंचजितः यंचरुनखवया
वयुदवीचयुनमचूति ॥ ॥ यंचयविः सान्तिप्रविम

विः अनगमाद्विसिद्धिवयसादारहनयिआः ॥ ॥ ॥

चविगिताः राजनऊनशुद्धमादप्रदा ॥ ॥ ॥

॥ **वागगंधाहेववी** ॥ ॥ तिनिलायनः चडवक्तविदाचारक

नक्ष्त्रयानिच्छामशुचदाम ॥ ॥ ॥ वादामहामकलीयाहं

मादिचउमाचारवागध्वमादवन्दिष्टादि ॥ ॥ वायुह

॥ निनिनायन ॥

चक्षुः उवाच यत्र वज्राश्च विमानाश्च वायुः शब्दाश्च तद्दिशम् ॥

॥ वामदेहि न कश्चिन्नवविषया कश्चिन्नविषयान्नव

आहूतिदिनाः ॥ कश्चिन्नविषयान्नवविषयान्नवविषयान्नव

नवविषयान्नवविषयान्नवविषयान्नवविषयान्नव ॥ ३० ॥

नवविषयान्नवविषयान्नवविषयान्नवविषयान्नव ॥ ३१ ॥

३३ दिगा ४॥

मालाः स्वलां वासां दिगाः लात्राजि कारयं कना ॥ वासु
दवी प्रकृ जूनकाः सयत्र विष्वादि या पिना शुरु इव न ह्यसि
लध विद्याः जडा मूडा कर्ष्याः मान विद्या ॥ ३३ ॥
रवाग विद्या ॥ उदिगात्र विद्याः युवन नक्षत्राणां श्रवण सद्दा
मकका सत्रगा ॥ ३४ ॥ द्या न इक्षु वरवा निसगत्र विद्या

३४ दिगा ५॥

श्रु स्वयानि च जनमा कृष्णा ॥ ॥ दिनक वस सुल
मया गगा शक वृक्ष मृत न वसं सव वरुणा ॥ ॥ दग्ध ज
लि रय यानि निदगा श्रवण जून वरुणि वन मिना ॥
गावर्णि यवनः यवि गुण रवगा श्रवण वाचा दिगुं शु मिचं
न मिना ॥ ३४ ॥ **रवाग रवे वदी ॥** राखन ख नी मरवः

वक्रविरुद्धः धर्मादियाया लेखुमिन्नश्कटागत्रमना हन
मधुवक्रव्याधुदियः कमनवना ॥ ५ ॥ इह एवमुन्नदय
कमनद्वियचक्रवश्चाद्विसिद्धिवन्नविश्वनावितासनः हायिन
महामहद्विसिद्धिव ॥ ॥ आदिवद्धद्विसमध्वमधुलविना
सयिस्वनचक्रवश्चानिन्नानिन्नवर्कसुन्नकिमंतीमन्तःमन्त्रायन

यन्निमन् ॥ वायुसात्रिबद्धदिहवृद्धवर्त्यक्षत्रजगताड्यः
वर्षंरसयववृद्धजीनःवृक्षकवयियाःनिर्गुवदहिययानि
लयव ॥ वायुयूउयदडासिभयियगलःताकव्विरुः
विरुंमत्ररसगुव्वववधमिबममधवीयाःरुनायिसून
वृक्षगल्ले ॥ ३५ ॥ वायुगगगगमात्रसि ॥ दि

॥४॥

शुद्धवृत्तकमव्यवकावर्धुंरमकूटक
नाहं हं गनाहं हं गनागताहं हं हं
हं ददिनकवर्धुंरहं उ आहं नमः सारिणा ॥ गमुर्क
मधुनमास्यः गांदवमन गिरवउ वाहि न सारिणा ॥
सगयुवचनधमि नगताय विद्याद्वयवावादि शुद्धमिल

॥५॥

यत्रा ॥ ३३ ॥ ॥ नमः सात ॥ उदया गिनीगठः बंगनी
कासाश्कूलिसकमैलाठक धात्रिगदवीः शुक्लदवी वक सर्वद
वनदिनः शुक्लद विराखत्रविद्याधनिदवी ॥ ॥ मनुय
पगिगुवनचक्र शुक्लदवी वजः सर्वदवदकः शुक्लदवी
दिवाकत्रविद्याधनिदवी ॥ ॥ उकात्रसवज संशकर



लिखारुद्रकृतोपनिषद् विष्णुसंस्कृतोपनिषद्

॥ **पञ्चमोऽध्यायः** ॥ अथ ब्रह्मसूत्रं समाप्तम्

ब्रह्मसूत्रं समाप्तम् अथ ब्रह्मसूत्रं समाप्तम्

ब्रह्मसूत्रं समाप्तम् अथ ब्रह्मसूत्रं समाप्तम्

ब्रह्मसूत्रं समाप्तम् अथ ब्रह्मसूत्रं समाप्तम्

सूक्तप्रहारागम्यस्य नृणां

वादादिनवासकमिनिडवक

सिनिदवीरयष्टिवज्रकारुयंत्रादिनवाधिया

वायुन

सासिमंरुद्रासमदाचिनविजयादयममपुस्यविमसिद्धि

दजगीना

वा

॥ अथ ब्रह्मसूत्रं समाप्तम् ॥

वडिद्यानिर्वना

विषयातिशयिनिवाधिनिकम्कडवाकिनि

नमामि श्रीजागामवल्लभानस्य श्रीशक्तिनिर्गुणद्वीः शिखर
 नययिसा ॥ ॥ यत्वेतत्कृत्ययसि मन्दकिन्नदिगदवीश्वर
 किनिदिपिनिचडसिकवाडनी ॥ ॥ यत्तुमात्रादिगर्वैरे
 रुचनतुदवीशक्तिनिनाचयिद्वत्तवाया ॥ ॥ दानिद
 नवक्ता ॐ न्यजुस्यगवाशवादगजागिनीसुमनसंल

वा ॥ ३९ ॥ ॥ शत्रागवसंग ॥ मध्विद्विगियत्राश्य
 निकवालाशसकवदवः वाद्यिरयादंग ॥ ॥ मंगीज्जा
 दिवद्वशीमंरुक्तायाश्वजूरिद्वंशनिपुत्रनिख्यस्वनाः
 ॥ ॥ कंकमत्रचिवायुत्रचिवास्वमाश्वन्यागारिल
 कवृणविद्याना ॥ ॥ विखयविखयः पार्श्वगतनस्यश

॥ ४८ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय

विष्णुविराडि गच्छीयं गुणसुखयं सु ॥ ॥ सतगुणसुखमासी
विष्णुना विदग्धमडागिर्वर्गे गीतः सुवनक विष्णु ॥ ४० ॥
॥ ॥ **रत्नागरेयवि** ॥ नमामि शक्तिनयानुकरं दक
यगुणसुखं निजानि गीतादयं च हानय च धागुखनूपा
वृद्धधर्म आनय खरा ॥ ६ ॥ गीता हं हं गीता हं हं र

ऊगागसंसात्र उध्वनीया मना दन नमामु नमामु पंचडी
नखत्रादयं च हानयं च धागुखनूपाः वृद्धधर्म आनय ख
रा ॥ ॥ नमामि शशीमानि केयने लक्ष्मि सिद्धि वल
वायनि शद्रि गद्वध्व सर्वपाख्य कनू दानयून यद्गमा
कपुदा ॥ ॥ नमामि श्वसि धागुवा गिखनखा दम इ

श्रीमद्भगवद्गीता ४॥

आययानिमादिनाश्वाद्यन्तान्नमसूतंमनंकात्रागसर्वदत्त
यानिमांस्त्रिणा॥ यानमासिद्वागिल्लनमस्तुल्ययन्
गित्रीनिवासिनाश्वाद्यन्तान्नमसूतंमनंकात्रागसर्वदत्त
मिडिनचक्रल्लवा॥ ४१ ॥ श्रीमद्भगवद्गीता ४॥
मंशनाथवयःमहाचितविड्याश्चन्द्रहासस्वर्गनाः

जितवचननिष्पन्नयात्रसकुलमाज्यःमाजिद
नःउरागनाथजूरयदाता॥ ५॥ ॥प्रिआमनिगारि
अवतात्रयात्रदवःयुनतामिवृगमत्रलाव्यवदवाशसिद्ध
कगिवयूदगयालिकमत्रायःपुवयतिर्वदामनितत्रदद
व॥ ॥प्राप्तिकमत्रकासितःवाधियानःवामकवधल

हाथशुभ्रसुमंत्रंनःप्राप्तकुकुःदाविदइस्वरयदवना
॥ ॥हूंहूंरगावगिकायारुगावतिनतामिष्टीयूगमल
दवाशनतामिश्रीनयंददवःस्वर्गमध्ययातात्रदव॥
॥दमशुमिष्टीप्रिआमत्रदनताजाअनूगमवचनशि
धवाश्रीअमृताएवसिप्रगतधयियाःशीलाक

प्रतापगिरि ॥ ४३ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

गामिद्विषां

अमुख्यं शुद्धिमुत्तमं अन्तर्गतं धर्मं अमुखागि खनं ॥ कु
 ॥ नमासि शक्तिनयं च जितनमास्तु रदमस्तु मिष्टाणि मन्त्र
 हस्तस्वनाया ॥ ॥ श्वर्गमध्याना नमुत्तमं श्रीकाया न
 कश्चिच्च उनीच जितमस्तु सति धना ॥ ॥ धर्मं श्रीमन्मह

॥ १८३॥

नखत्रिमशतनियामैत्रेद्युताम्यसूत्रासूत्रलूयि॥ ॥ वा
मयुजयूकधनधनशददितनिल्लरवर्जसवधना॥ ॥
श्रीलाकखनमधुलमहासूत्रलायाशनाजाधिनकुशीननलुम
नदवं॥ ॥ श्रीवजावाकवधूदकआवाकशरुतयिवाक
उजिल्लाचनविना॥ ४३ ॥ ॥ रमागवनादी॥ ॥

श्री ग ८॥

तदाथनामसमुलनामः काठिसाथः नामाददा
काठिसाथनामजागितिः वृंदयामः वास्तुदिः नवददा॥
कु ॥ उंकाठसमुलनामः सुविनामः जागिति वृंदयामश्च
इष्टागुस्वचिकिष्टः आलिगनः वास्तुसकलसमाधि॥
॥ पूर्वचक्राधिक्रियायः दक्षिणतलविहलियायश्चर्यसिः

यस्ययुकासयः उरुस्वर्गधधियाय॥ ॥ संयुक्तकार
जागः निसिस्वयंकाधियाश्चकायवाक्यिरुसमुलनामः रुली
यात्रगागधकदय॥ ॥ नृपसूयगंधर्वस्ययथाः ॐ न
मिथयमीधगस्वविदकध्यामसुचयथाः गडागिवाहन
यजामदाधिया॥ ४१ ॥ ॥ श्यागविहलियायश्चर्यसिः

॥८॥

॥ स्वः वरगवदंश्च नगानमकूटकसिः निजिवाचना ॥
कु गानमादवीवृद्धां किं निविश्वजननि शिगुवर्ध्या
पितृजिनहानयनी ॥ ॥ ददिनकववजः विनासित
दग्धमिश्रवामकनाटकः चशुमानसिधिवशि ॥ गगन
निमलुलतामः उदियावगसनश्चधनयूववनः गतगयव

॥८॥

सिनी ॥ ॥ श्रीवीयाधनिदवीः सूवनप्रसादिगाश्चकल
विद्धिसिद्धिदहीममाता ॥ ४८ ॥ ॥ रत्नागतादी ॥ यंचक
यात्राधामिसीविः यंचरुतयंचमडाहवभाश्चनसिप्रमात्रा
शंवाखराः वाचवर्माकरिवैथितजनदा ॥ कु ॥ हूं हूं का
संजागवर्धः स्वर्चवमादननिप्रसमददाः काधधिवगीस

साकोत्राश्चैकस्मिन्मन्त्रस्यैव नरुत्रियाः शायनवृत्तकथात्र
धमा ॥ ॥ त्रकयगात्राणि नितयभाः शायनं कत्ररिखमः
दहा २ उर्ध्वयकालिताः यिर्गत्रकसाः कत्रधमय ॥ ॥
कत्ररिखकयानधमिखल्यगमनागकृधुलदात्रा २ नागसिल
सिन्धनीयूत्रनागः शूषनागशूरनतसूसा ॥ ॥ डि

नवनमोत्रिधमिनमगावर्धसमसाभनवदकवित्राश्रयगा
वृद्धागां दरायाः शमसागकालिसाः शूनरुत्रसजना ॥ ४६ ॥
॥ ॥ **॥ रागात्रात्रितवसगा ॥** उर्ध्वरुत्रगशीत्रितनखरा २
दनित्रइति यिर्गत्रकसा ॥ ॥ ॥ उगागनूकंयकृपागुनदवी
२ इरुमावविनासनिदवी ॥ ॥ त्रकनयनगिनिनूदमात्र

ख गै क व लिः क या न नि मा ल्य ला ॥ ॥ वा यु च र्म व स्रु य ला
 लि हा श्र व र्च व म्वा द न स र्वा का ना ॥ ॥ व न न स र्वा णी ड
 र्ज ता नू नि मा ता श्रु न यि अ मा व ड गी न च वि ता ॥ ५० ॥
 ॥ **रागा रास** ॥ वि द क म वः व न का स्र म स्र वं लाः स धू क ल
 ह नू डा वि ता श्रु वि नू याः क ग र्ख गी स्र ह द वीः स धु न न यो व नु

व्या पि ता ॥ ५१ ॥ न मा मिः नै मा लाः वि शु व न मा ताः वा रु नि
 द वि शी म र्ग र्थ वि श्र स य व स्र मा स्र व व दि न च व नः अ न वा नि द्वि
 सि द्वि व न पु सा दा ॥ ॥ नं द न वः अ मि व चं द न न नू याः अ
 न वा क स्र मः या वि डा न व न श्रु ल्य गं ग म अ स म वा रा स टि नि
 अः अ न ग र्ग र्थ सः क उ व न ॥ ॥ अ स्र र्ण वः अ स्र क मि ली

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अष्टादशवर्षासूत्रं कथयामास अष्टमहासूत्रं नित्यं निवाच
निःशून्या विद्युर्निवाचनी ॥ ॥ विद्या विद्या विद्या गात्रनी
दवीः अस्वयं निलंजनः कतिमयं अहं स्यात् सुखं सुखं सुखं
दायनिदवीः कलमज्जनं सुखाय सन्ननागानि ॥ ५१ ॥
॥ ॥ श्यामा गृज्जामवसृज ॥ जिनवनजननिःपुलाख

वलसतं शिवितासयि सप्तमसंः ददा आलिगाम् ॥ ६ ॥ नि
नसहस्रत्रयः गृज्जामवसंयुध शमन्त आत्रिगत आनंदवय
न ॥ ॥ वायसुलागसमयवधियसयन्य श्यामा विवाग
इयिमास्यः निखना ॥ ॥ अवज्जुत्रिसंजागः विमुख
अष्टमनयसुखसंः ददा आलिगाम् ॥ ॥ ददददद

अनासिक ॥

गुवनः श्रीजागमस्वमाश्चनसामिहानखविआलिगाम

॥ ५२ ॥

॥ रमागकोसिकवसंत ॥ अतसिकसुसय

निदहयुगस्वमाश्चिविदिदंतनसमिमकृतविशुशिवमा

॥ ५३ ॥ नाचयीनः श्रीअचनविमाश्चनानाचोआनन्दविमा

सयिअचमा ॥

॥ वामडरुयः विशुसुडादमनाश्चह

अनासिक ॥

आलिगामः अद्ययमहासुद ॥

॥ विमागचधुरुवरुय

कवाश्चनानिदिगः स्वगीगर्कुनियामा ॥

॥ माचचनुद

यनीशिवविष्णुदगाश्चविमसिर्यगनाथः गगधविमासि

नि ॥ ५४ ॥

॥ रमागरेववी ॥ अस्तद्वययात्रदिगांदि

गुवनः वसिष्ठमाचचनुलनागमश्चगगधसुस्वतः गगधः

नमूनंका नाः गगन उल्लवृत्त यद्विंशति ॥ कुं ॥
नमाति यंच जाकिनीः यंचैरुगर्गिः हानवाकिनी भवत्यु
हं रुगर्गा ॥ ॥ पूर्व उल्लवृत्त यद्विंशतिः दक्षिण
विद्युत्सर्वं दिया प्रदा किनी दियि निवृत्त सिकताजः व्या
प्रवृत्त संश सवदती ॥ ॥ सिद्धि निव्या दिति रुक्म

प्रेषेत्तु र्गा

उल्ला किनी स्वत्वा गवत्र मुः अंक्र सह संश्वत्त जा किनीः
व्यावृत्त तात्र जा किनीः च व्यावृत्त जा किनीः च पुत्र दती ॥
॥ किनैवृत्त निदती जा किनी उरु याय सत्र हः यंच स्रडा आरु
त्रहा विरु खिता श्व गीरु टकः वृत्त यं थ स्वत्वा गः या गयत्र
वात्रिः हान दती ॥ ५४ ॥ ॥ गगने नदी ॥ पूर्व वृत्ता यनी

समावृत्तकनकवर्नशुद्धगुणगुणविशेषः ॥ नमो देव्या नमः
स्ववादानः चंद्रधवत्रिगुणमयत्रिधात्रिः ॥ ॐ ॥ ॐ ॐ ॐ
सममानः नित्रवात्रसदिर्गः शुद्धरेवगद्यगिसादिर्गं २ शुद्धः
साद्विजमन्ननमाद्युदाताः समन्नकपायययदन्नं ॥
यष्टिमंष्ट्रायनिः दक्षिवादानः कंकमवर्णगन्नविजयद

लाशदक्षितवाहीनोऽद्यतद्यात्रयिनिशुद्धसमदिगमदिषा
सर्गं ॥ ॐ ॥ नमो वसुकादवीधुमवर्णकसिमवदव
गात्रः दववृत्तदिर्गं २ शुग्निदिष्यकसात्रिः मयववादानः त्रक
वाकसवर्नमाकिदक्षं ॥ ॐ ॥ नमो वसुकादवीधुमवर्णकसिमवदव
स्यामवर्णगात्रवृत्तदिर्गं २ वायव्यव

नाः सिंहवाहनः खर्गध्वजः॥

नियः रुद्रगुणः दिगः ऊर्ध्वः

रुद्रगुणः निरुद्रगुणः निरुद्रगुणः

धनाः सिंहः सर्वाकारानाम्

हवतः रुद्रगुणः मद्यः

॥४॥

साया जात्र ४॥

उत्तिग वृचक खल गी वन उवनन सित्र सात्रा ॥ ॥ स
वृग थग गजन तिः विव दित राव अ ला वा र्शी वरु का गि नीः
ववन सित्र गतः गा व नि स म न सं व ज्ञा ॥ ५३ ॥ ॥ र वा म
द मा व ॥ सा या ज्ञा ल वि म् स सा धृ स त्रि ना र मा द सा या उ व द्वा दि
या न सा या मा हा ॥ ॥ ॥ यं सं सा न अ म नः ना रा द्दु ख मा द द्वा दि

वृज का गि नी ४॥

ला या न नित्र आ सा ॥ ॥ अ न मी ख न व र्ध क र सि त्वा र व
म म न वि ख दा ग य र्ध द क ॥ ॥ स द ज ल्प ल न य उ न द्वा
ग ग व त्रि या र यं स्र य न मः सा र्ग स न न ल ॥ ॥ अ न धू व
उ द या व न्द या य य मा दा र म डा ति नि द वीः र व क ना वा वा ॥
५१ ॥ ॥ र वा म म र्ग म सा न सिं ॥ व र्ज क गि तिः द न्द

गाय २ शिषुवननाथददा मयान ॥ कु ॥ यित्तयित्रमहा
 सुषलकसकलियिया २ व ऊद वीरुत्रयियाः अनूरुत्रका
 न ॥ ॥ उर्द्धनात्रिगिदत्रकमत्रसंजाह २ ददीम जादसा
 यवनसहदनि ॥ ॥ रुऊयित्रयंयमहासुख २ यंच सि
 वमः विर्जवात्रु ॥ ॥ हगगुत्रुयसादः चगुथासिन्नक

श्याहासयित्रः संसात्रमसुडा ॥ ५६ ॥ ॥ राजात्रुआ
 ॥ ॥ हूँ हूँ कात्रस जागः ॐ दू निलसमइ तिदहा २ यकालक
 वनसमकवनकात्राक वासमाक वा ॥ कु ॥ ऊसंरुअवत्रअ
 नगमत्रु तिभव गैयामक वसा लि २ ऊगगनाथक वागयात्रिग
 मदाकावुवाया ॥ ॥ अत्रनिनिविप्रदिगवासजात्रकया

२५ कात्र
 से जाग ८॥

[illegible]

॥ वृक्षद्विहवः तस्य सा सन दय्य दवन सुविवा श्रद द

निषिगदिगायत्रस।य।कित्रविद्युदगा॥ ॥ विविदित्रला

हवनमुद्दिताः दिवात्रहस्यसोमिश्कगगवाष्टिगसर्वसंपद

सिद्धिवन्तु दायकं कहु ॥ १२ माया कहु दीपाजी

देवक नैत्रा सादवीः शिशुवननाथं शयचर। दिनव्यायिनाः
यचवर्धददा॥ ॐ ॥ नमामि शशीयूष्मावाचैत्य शदनूकः
शीरुक्षस्व निःवज्जक। गिनीसूतका॥ ॥ यवदिवाहिक
गरुथिप्रः निमवर्ध्ना शददित्यायुक्ता विगम। विन्दुधना
॥ ॥ यस्मै लिख्यो लिख्यो विज्ञा गिनीदवी रगाता लिखाव

यचवर्द्धददा॥ ६३ ॥ तसा मिश्री ययाय

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

मरुथिजः निजवर्ष्शिशद्वि ता मा ह मा विषा न वि

॥ यस्मै लिख्यो लिखी विष्णुगिरी इति नाम्ना

...जागनादवोरगाडातिलिजाव

ॐ स्वस्ति नमो ॥

五

51
24

七

॥ १८ ॥

ऊर्द्धकाय ॥ ३० ॥

॥ राग मलाद ॥ योगन कानराव आन

धियाय शसिर्वाजा विनीतं वृद्धं नलं ददत्वा ॥ ७ ॥ अनन्ता मिथी
लाके खनयिषु वृद्धताथ रक्तं नमयद्वा गगन उदधालिया ॥
हृदि हनवस्माँ न्यादि गायत्रा रता गायै र्द्वगवर्षादि गायत्र नमः ॥
॥ गुक्तं सतनक्त याय हनन्य रव्याधिदा विप्र इह हल

४॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ सुखावगिरुवमः धर्मसन्त्य श्लाकस्वः जल
जलमत्रह ॥ ३१ ॥ ॥ राम राम ह्री ॥ वासस्वत्य
धनः ददिन कवलि श्यायत्र उवलद सात्र मु सिगा ॥ ५२ ॥
दवी नाचायि व क ऊ टिः व ऊ या मि नी श मि नि न गु द वी
गिरुवनय यि म ॥ ॥ का व म र क इ यिः या म ल व द्वि

कमलाविकासि

प्रश्नागद्विखमादकनरिनद्धदिता ॥ ॥ धूवसूत्र
मात्रिः निर्वंकनदवी शंभुनायागदवी सून्यगुहावा ॥
मृलिहंसात्रायाः कूबलाकदवी शमाक्रमगुम्भमविभ
जननि ॥ ३२ ॥ ॥ **त्रागानिवादा** ॥ कमलाविकासि
नः लिगिलाखत्रः कूसूत्र पियवंदर्शसमदेहाश्यगुचवदन

कूवत्रयदवनर्गः यमनखयुकासिमा ॥ ध्रु ॥ नमानिश्री
महामंश्रीसकत्रगुणत्रायः सूर्यगुनूरक्रमगिदहनल्लनव
त्रयुयः सर्वल्लननिद्वियार्गगाता ॥ ॥ यथनकनद्वय
वज्रयधुधनः सदाजाविंगानावाडितादिगियकूमाध
नः गिगियनः ल्लनखल्लः चनुथखनीसर्ववचधवा ॥

८॥ विष्णु ८॥

मरुतयुक्तया मरुतवर्धमानायः चरुधर्वा मधुकयसु
कदम्बलसकूटः युक्तविग। किं वीचवद्वमधुगगनरिवरा
॥ ॥ निवृद्धिवृद्धिसायिकमै मरुतलामरुताः सर्वकृत्तन
वियः सागनाश्यममानन्दवजः कलाने वृद्धसमस्तसमस्त
गति ॥ ३३ ॥ ॥ रत्नागवल्लिगा ॥ विश्वय विश्वय वि

नूयवतसका मरुतयिवंजा विनिता रिकमनश्चदहयि कि
नविन्दुमासिः मदीयिसुमनवजः निनिआलसविह्यामसयजं
॥ ३४ ॥ नसीमंशुद्याखंः कामचक्रुः दवजसंस्तव विश्वययं
ययियदूमसंजागसकव निमयनः सदज आनन्दमयल्लनन
यं ॥ ॥ वज्रयजं कामनकृकमनूनतन नूतामसंगीति अ

द्वायश्चान्द्रजगत्तद्वत्तः वा विद्वन्दायकः कर्माधर्म
 मान्द्रावद्विष्णुः ॥ गुणवत्तद्वत्तद्वत्तः गुणवत्तद्वत्तः
 कर्माधर्ममान्द्रावद्विष्णुः कर्माधर्ममान्द्रावद्विष्णुः
 गुणवत्तद्वत्तद्वत्तः गुणवत्तद्वत्तः गुणवत्तद्वत्तः
 ॥ ॥ स्वप्नमायासंयुक्तः स्वप्नमायासंयुक्तः

संयुक्तमायासंयुक्तः गुणवत्तद्वत्तः गुणवत्तद्वत्तः
 स्वप्नमायासंयुक्तः स्वप्नमायासंयुक्तः ॥ ३४ ॥
 ॥ स्वप्नमायासंयुक्तः स्वप्नमायासंयुक्तः ॥
 स्वप्नमायासंयुक्तः स्वप्नमायासंयुक्तः ॥
 स्वप्नमायासंयुक्तः स्वप्नमायासंयुक्तः ॥

॥ ३४ ॥

२६ निमेष म॥

वामयस्तु कथं गुणनायाश्च यथा स न का त न द
हा ॥ ॥ दाहिन वाम कथं धनं भवति श्व गुणा न द
य न वाम युसादा ॥ ॥ ऊगान न यात्र नाथ युसादि ग द
दया श्रुति मन्क सुख रुच वल युसादा ॥ ३५ ॥
॥ **रामा राम** ॥ कृति स य मः रुचः कि न धा तु विजं निवृ

य मः धर्म धा गुण यश्च क्लानः य च कि न धा तु र्कं धा
सर्व वृद्धा य नु य दं ॥ ॥ कृ नान मा सी श्री म कि द्य नः धर्म धा
गु व्या पि ना श्रु न ग दे वा सु न स वि ना ॥ ॥ ऊगान न यात्र नाथ युसादि ग द
नः पि तु व न क नु य सु न यिः य च र्क धा ग न श्व गु न च गु य जी
मं लि तु नः म लु लाः वि दि ता न द वी म लि तु ना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

विष्णुकाव्य १॥

ना॥ ॥रुनयिशी सिद्धिवज्र गी गच लिगाश्च नमः सवन
माकुरु नयसाया ॥ ३० ॥ ॥रजागमलादा वंका
संजागः बलिगासनखाश्च नमः कवर्क प्रवच कथ ठनुजा॥
॥नमामीजन निदेवीशी वरदा रात्र तमकठ
नारुधैत्रर विगा॥ ॥ वामगुह्य पठ केन मर्तु

अग्नि निवच २॥

त्रियाश्चु ह्यायन मिदरु कक्षालिगा॥ ॥ नानाचा विना
यदा विदह वनाश्चिन्मन्त्रजगन्नादिद हिममाता॥
॥ ३१ ॥ ॥रजागमलादा ॥ अग्नि निवच कुरु विवदा
नः मयसासन शक्ति कसुदं दंश्चोदरुयानकः पिथस्वतः
असुम्भान मदाका पुत्राया॥ ॥ ॥ हं हं कात्र पचदं गा

।गीकागद्ययिचुगंरसचकमलः वासविंशद्विनिचनन
गचर्म॥ ॥ययनविशुलः वक्रासिनः नाग।डे मोहगयि
यंरकुनवकं यचवुवाचनः चकमागुडुदिकर्म॥ ॥विनी
नगुं।रे कवदनः अत्रिगमसमदः धसनकवर्नरप्रदन
रुवासारिगाः गनवः अरुप्रसादितं॥ ॥रुकुदानयनी

वः ग्रासायनः काष्ठिगार्थवप्रदयंरकुलाउन्मासदइगीरैल
वचननः सद्यनामं॥ ३६ ॥ ॥रुगनका॥ नसा निर
शीनिचवर्धुदवंरकुसखविनिनयुगआमर्त॥ क
नसा निरशीमसाशैववनमोरुदराउ आरुवनमूमुमाल
खरु॥ ॥गनयनिमसाकालदप्रतकुर्तेववंरसिदिनी

विनी
नगुं
रुवा
सारिगाः

आदिनिमार्गिकाह्वयं ॥ ॥ मात्रियामाननद्रुख्य

॥ सा विद्या सा न न दृष्टु रय

हृत्तंशविष्णुविनासनरुवद्रुवगात्रतं॥ ॥सगगुल

॥सगमुल

वचनसिखगद्वित्रियाश्चवनसलनशीहचवंग ॥ १० ॥

॥ स्वामिने नमः ॥ सर्वं नमः ॥ मित्रं नमः ॥ वासुदेवा

॥ रत्नागलेन वीर्यं न्युगममन्यः सिद्धसत्तुकाः वागुदी
नागा वा किममद्याश्च दन्तमस्तानः ज्ञेयकतुकाः यूतिकम

नाम वा किमस्य शय दनमस्तानः अस्व कवृ काः यूतिकम

द्याः नक्षत्रनामाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रस्वमजकुरुतवद्विः वायूनाक्ष

सादिगवीदिगवलिद निचरञ्जसमसानः शु. प्रिसविचरञ्जना

वसिष्ठसहजानंद ॥ ॥ कंकनिद्यानावरिगभयाः कानाकृना

ककटय नागशकनंकरे नवाय रुतमद्याः सत्रासिद्धनागः चूग

कचुक्षाश ॥ ॥ अष्टदशासाः संश्रव्यानागमः यत्त्येचमद्या

॥ अष्टदशासाः संश्रयाननामः यन्त्येवमद्या

